International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 8, August- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

exy dky e Hk&LokfeRo

Mk chjUn dekj
,lkfl,V ikQlj] ikphu bfrgkl] ijkrRo ,o lLdfr foHkkx] c) LukrdkÙkj
egkfo|ky; कुश्khuxj] m0i0A

Hkkjr ikphu dky l gh कृषि i/kku देश रहा है। इसलिए देश की सर्वाधिक जनसंख्या सदैव से खेती पर आश्रित रही है। परिणाम स्वरुप देश की बहुतायत आबादी की सुविधा को देखते हुए अकबर ने कृषि के साथ–साथ किसानों की दशा में सुधार करने के प्रयास भी किये। राज्य dh lokf/kd vk; dk lkr ikphu dky से कृषि रहा है। अकबर ने कृषि के विकास की ओर विशेष ध्यान दिया। उसने भूमि सुधार हेतु विकास कार्यक्रम चलाये। कृषि के विकास में lokf/kd ;kxnku fdlku gh n ldr FkA blfy, vdcj u fdlkuk dh lfo/kk d fy, jkT; dh vkj l le;&le; ij mUg ikRlkgu Lo#i ijrh Hkfe ijकृषि करने हेतु प्रेरित fd;k tkrk FkkA

कृषि तथा कृषक का सम्बन्ध अटूट होता है। इन दोनों के मध्य की अटूट कड़ी भूमि होती थी। exy dky e Hkfe dk okLrfod Lokeh fdlku gkrk Fkk vFkok lekV[1] bldh tkudkjh vkx iLrr dh tk;xhA iphu dky e Hkfe dk Lokeh lekV gkrk FkkA bldk leFku vk/kfud y[kd MkO iUr u bl idkj fd;k g fd ,d&,d bp Hkfe ij lekV dk vf/kdkj gkrk Fkk rFkk Hkfe dk okLrfod Lokeh Hkh lekV gkrk FkkA[2] ijUr vU; y[kdk l तुलना करने पर पन्त के पक्ष की पुष्टि नहीं होती है। इस सम्बन्ध में परमात्मा शरण का मानना है कि भूमि का वास्तविक स्वामी कृषक ही होता था और उसके इस हक पर कभी भी कोई शंका नहीं की गयी।[3] vU; y[kdk dk fopkj g fd lekV dj lxg dju dk vf/kdkjh rk gkrk Fkk] fdUr og Hkfe dk Lokeh ugh gkrk था। यू0 एन0 डे ने इस विषय में प्राचीन हिन्दू कानूनों के अनुसार निष्कर्ष निकाला कि भूमि, कृषक की lEifÙkgkrh FkhA ikphu शास्त्रों के अनुसार भूमि उसकी होती है, जो उसे lcl पहले साफ–सफाई कर कृषि योग्य बनाता है और शिकार किया हुआ हिरन उसका होता है, जिस शिकारी का तीर हिरन को igy yxk gkrk gkA[5] ;|fi bl fopkj dh ekU;rk ugh jg xb vkj LFkkiuk gb] fd tk Hkfe dk fot; djxk] ogh ml Hkfe dk Lokeh gkxkA

पश्चात् में चलकर उपरोक्त धारणा भी जाती रही और यह निश्चित हुआ कि विजय के पश्चात् fotrk lekV ?kj] Hkfe itk rFkk ijkftr lekV d vf/kdkjk dk Lokeh cu tkrk FkkA विजेता राजा कर संग्रह का स्वामी भी बन जाता था, किन्तु भूमि का वास्तविक स्वामी कृषक gh ekuk tkrk FkkA[3] ;fn tc dkb jktk Hkfe dk nku djrk Fkk vFkok Hkfe dk fdlh dk ijLdkj Lo#प देता था। तो उसका आशय था कि राजा भूमि दान अथवा पुरस्कार के रुप में Hkfe ij fy, tku oky dj nku dj nrk FkkA[4]
भूमि राजा की धरोहर नहीं मानी जाती थी। अर्थशास्त्र के अनुसार राजा को उसकी सेवा के बदले निश्pr dj fn;k tkrk Fkk] tk fd jktk dh lok dk पारितोषण होता था, जिसके बदले वह कृषि क्षेत्र की रक्षा करता था।[5] bl idkj l fgUn dkuuh xUFkk d vuljkj Hkfe का वास्तविक स्वामी कृषक माना गया था न कि सम्राट।[6] tk y[kd Hkfe ij lekV dk LokfeRo gkudh ckr djr g] og ;jkih; ;kf=;k d oÙkkrk l ifjr gA[7]

कृषि भूमि के स्वामित्व के सम्बन्ध में परमात्मा शरण इरफान हबीब के साथ सहमती जताते हुए समर्थन करते हैं कि यूरोपीय यात्री भारत की जटिल कृषि व्यवस्था को समझने में असमर्थ jgA[8] सामान्यतः मुगलकालीन भारतवर्ष e Hkh fgUnvk tl fl)kUr gh Hkfe d LokfeRo d fy, ykx gkr FkA[9] vkbu e Hkh vCky Qty u vkbu e dgh ij Hkh Hkfe LokfeRo d लिए शासक के दावे का समर्थन नहीं किया है। वह केवल अपने भाग का कर वसूल कर Idrk FkkA[10] इस सम्बन्ध में मात्र यह कहा जा सकता है, कि कोई भी कठोर शासक अपuh निरंकुशता के फलस्वरुप किसी किसान की भूमि छीन ले, परन्तु इससे यह स्पष्ट होना चाहिए, कि वह भूमि का स्वामी है। सर्वथा गलत सिद्ध होगा। इसलिए परमात्मा शरण की यह मान्यता g] fd tk fdIku ftI Hkfe ij [krh djrk Fkk] og mIdk okLrfod rFkk o/kkfud Lokeh gkrk FkkA[11] शेरशाह के समय में अब्बास शेरवानी द्वारा दी गयी जानकारी का यू0 एन0 डे ने हवाला दिया है, कि शेरशाह का भूमि कर व्यवस्था के सम्बन्ध में यह विचार था, कि यदि सम्राट कृषक की रक्षा तथा सहायता नहीं कर सकता तो उसे कर लेने का अधिकार भी नहीं gA

exydkyhu Hkमि व्यवस्था शेरशाह की भूमि व्यवस्था से प्रेरित थी इसलिए मुगल काल में भी कृषक ही Hkfe dk Lokeh ekuk tkrk FkkA vcy Qty u fy[kk g] fd jktk dk dr0; itk dh j{kk djuk rFkk mI Ifo/kk, inku djuk FkkA vr% jktk dk fdIkuk dh j{kk vkj Ifo/kk nu dh nkf;Ro dk fuogu djuk pkfg,] rHkh og fdIkuk I dj Ixg dju dk vf/kdkjh gk Idrk FkkA[13]

exy dky e vdcj o tgkxhj u ,I fu;e cuk; Fk] ftud }kjk dj Ixg dju oky अधिकारी और सबल वर्ग के लोग किसानों की भूमि को अपनी भूमि (खुदकाश्त) ugh cuk Idr FkA[14] vkjxtc d le; e lekV vkjxtc u ,d Qjeku egEen gkfIe dk tkjh fd;k Fkk] ftIe fdIkuk dk ekfyd rFkk vjckc&tkfey vFkkr Hkfe d ekfyd d uke I IEckf/kr fd;k x;k FkkA[15] bl idkj l mDRk rF;k d vkykd e fl) gkrk g fd Hkfe dk Lokeh fdlku gkrk Fkk] fdUr bl lEcU/k e ekjy.M d fopkjk dk o.ku djuk Hkh egRoi.k gA ekjy.M dk विचार है, कि यद्यपि अकबर के शासन काल के अंतिम वर्षों में भूमि सम्बन्धी अधिकारों में कुछ परिवर्तन अवश्य हुए, परन्तु कोई क्रान्तिकारी परिवru ugh gvk rFkk ijEijkxr i)fr gh pyrh jghA[16] मोरलैण्ड के अनुसार परम्परागत रुप में कृषि से सम्बन्धित दो ही वर्ग थे। प्रथम lekV rFkk f}rh; itkA itk d vUrxr fdlku rFkk tehnkj vkr FkA ;fn bue l dkb Hkh 0;fDr viuh Hkfe ij LokfeRo cuk; j[kuk pkgrk Fkk] rk उसे अपने कृषि उत्पादन का ,d Hkkx lekV dk nuk gkrk Fkk rFkk lekV dk cny e itk dh lj{kk dk Hkkj mBkuk होता था। अतः मुगल काल में भूमि के स्वामित्व का कोई औचित दृष्टिगोचर नहीं होता।[17] सम्राट को राजस्व की आवश्यकता थी तथा अधिक भूfe ij [krh djuk vf/kdkj d ctk; dr0; le>k tkrk FkkA

ekjy.M d fooj.k l irk pyrk g fd Hkfe ij lekV dk LokfeRo ugh gkrk Fkk] fdUr ekjy.M ;g Hkh dgrk g fd Hkfe ij itk dk Hkh LokfeRo ugh gkrk FkkA[18] ;fn dkb कृषक uohu ijrh Hkfe dkकृषि क i;kx e ykrk Fkk] rk ml dषक को] ml Hkfe dk ekfyd cuk fn;k tkrk FkkA bl idkj dk fu;e fgUn rFkk efLye nkuk dkuuk e FkkA मुगल काल में वह व्यक्ति जो प्रथम बार परती भूमि पर कृषि करना प्रारम्भ करता था। वह ml tehu dk tehnkj Hkh dgykrk Fkk vkj ekfyd Hkh dgykrk FkkA[19]

tehnkj%

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 8 Issue 8, August- 2018
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 6.939 |

tehnkj ,d ,lk O;fDr Fkk] ftldk viuh O;fDrxr Hkfe vkj xko dh ijrh vFkok mtkM Hkfe nkuk d n[ky vf/kdkj dk fofu;fer dju dk vf/kdkj FkkA tlk dk exy dky d nLrkotk से स्पष्ट होता है, जमींदार का यह कर्तव्य था कि वह कृषि भूमि की देख भाल करे, तथा उसे कृषि के अन्तर्गत लाये। इसके अतिरिक्त वह इसके लिए वाध्य था कि वह राजस्व को अपने पास से अथवा कृषकों से वसूल करके शाही [ktku e tek djk;A bl idkj l xke dh ljpkuk e tehnkj dh i/kku Hkfedk gkrh FkhA fofHkUu Jf.k;k d lko/kkuh l fd; x; v/;;u l Kkr gkrk g fd exy lkekT; e ,d Hkh ijxuk ,lk ugh Fkk] ftle tehnkj u gkA[20]

nf{k.k e tehnkj dk *orunkj* dgk tkrk FkkA orunkj LFkkb vf/kdkjh gkr FkA xke प्रशासन d lpk# lpkyu हेतुवतनदारों के कर्तव्य अति आवश्यक होते थे।वतनदार क #i e o jktLo oly djr Fk rFkk कृषि भूमि के {k=dk foLrkj djr Fk] LFkkuh; vkilh fooknk dk fuiVkr FkA xkek d vUrxr mRlok ,o lekjkgk dk djokr Fk ,o ub cfLr;k clkr FkkA[21]

dशकों d idkj %

कृषकों}kjk fu;f=r Hk–क्षेत्र के विस्तार, कृषकों के द्वारा प्रयोग किये जाने वाले भाड़े के श्रम vkj /ku&lEifÙk d vk/kkj ij exy dky e ik;% rhu idkj d fdlku gkr Fk&iFke खुदकाश्त, द्वितीय, पाहीकाश्त और तृतीय मुजारियान। इसके अतिरिक्त prFk o fdlku gkr थे, जो कि भूमिहीन होते थे और दूसरों की कृषि Hkfe;k में कृषि मजदूरी का काम करते थे।

1- खुदका□त कृशक :

खुदकाश्त कृषकों को मुगलdkyhu ljdkjh nLrlotk e *ekfyd& ,&tehu* vFkkr Hkfe dk Lokeh dgk x;k gA exy lkekT; d fofHkUu Hkkxk e bUg fofHkUu ukek l tkuk tkrk FkkA tl& jktLFkku e mUg ’गारुहाला’ अथवा ’गावेती’ तथा महाराष्ट्र में उन्हें मिरासी अथवा ’थलवाहिक’ कहा जाता था। खुदकाश्त कृषक वे खेतिहर होते थे, जोकि उसी गाँव की Hkfe e कृषि करते थे, जिसके वे निवासी होते थे। किसानों का यह वर्ग वास्तव में अपने द्वारा fu;f=r Hk {k= d Lokeh gkr Fk] mUg viu Hkfe ij LFkkb vf/kdkj iklr gkr Fk] ftUg कुछ हद तक जमींदारों जैसा दरजा हासिल था। खुदकाश्त किसानों को अपनी lEifÙk cpu का अधिकार था। वे उसके वंशानुगत अत्तराधिकारी थे।[22]

2- पाहीका□त कृशक :

lkkghकाश्त किसानों से तात्पर्य उन कृषको से था, जो दूसरे गाँव में जाकर कृषि करते थे, वहाँ पर उनकी अस्थाई झोपड़ियाँ होती थीं। उनको कुखकाश्त किसानो dk Lrj rFkk विशेषाधिकार प्राप्त नहीं था। वे खुदकाश्त किसानों की भाँति मालिक–ए–जमींन नहीं थे, परन्तु mudk लम्बी अवधि के लिए अधिकरण अधिकार अवश्य प्राप्त थे। पाहीकाश्त किसानों के iklmruh gh Hkfe gkrh Fkh] ftruh Hkfe dk o viu ifjokj lfgr tkr ck ldr FkA[23]

मुजारियान कृशक :

etkfj;ku o fdlku gkr Fk] ftud vf/kdkj e bruh de Hkfe gkrh Fkh] ftl l mud lEi.k ifjokj dk jktxkj ugh fey ikrk FkkA blfy, o viuh Hkfeपर कृषि कार्य करते हुए अतिरिक्त समय में खुदकाश्त किसानों की कृषि भूमि में etnjh djr FkA vFkok खुदकाश्त किसानों से कृषि भूमि किराये पर लेकर उस पर खेती करते थे। मुजारियान कृषक

अपनी कृषि जोत बेच नहीं सकते थे, किन्तु वे एक बार अपनी कृषि भूमि को छोड़ देने के पश्चात् पुनः उसे प्राप्त कर सकते थे। अतः पुनः अपने खेत पर वापl vk tkr FkA[24]

भूमिहीन कृशक :

exyकाल में कुछ इस प्रकार के कृषक भी होते थे, जिनके पास या तो कृषि भूमि होती ही ugh Fkh] ;k gkrh Hkh Fkh] rk cgr gh de gkrh Fkh] ftUg f[knerh itk dgk tkrk FkkA o thou ;kiu dfy, vU; fdlkuk d [krk में कृषि कार्य करते थे। जिसके बदले में उन्हें फसल कटते समय उपज का एक निश्चित भाग प्राप्त होता था। बोआई तथा कटाई के समय वे आकस्मिक श्रमिकों के रुप में भी अन्य कृषकों के खेतों में मजदूरी पर कृषि कार्य करते FkA[25]

Hkfe d ikdkj %

कृषि कार्य में लगे हुए उपरोक्त जनों के अतिरिक्त किसी भी देश के कृषि कर्म में लगे हुए लोगों के लिए भूमि की आवश्यकता होती है, जिस पर कृषकों का स्वामित्व होता है। इस आधार पर मुगल कालीन कृषि भूमि को अध्ययन की सुविधा के निमित्त निम्न प्रकारों में बाँटk tk ldrk g& iFke [kkfylk Hkfe] f}rh; Tkkxhj Hkfe] rrh; Hkke Hkfevkj prFk *Lkkl.k* vFkok *evkQh* HkfeA[26]

1- [kkfylk Hkfe %

;g og Hkfe gkrh Fkh]ftldk icU/k dUnh; ljdkj }kjk gkrk FkkA vkj ftldh vk; jkT; dfy, ljf{kr gkrh FkhA exy dky e [kkfylk Hkfe lkekT; dh dy Hkfe dk chl

प्रतिशत हिस्सा थी, किन्तु इसके क्षेत्रफल का प्रतिशत बादशाह की मर्जी से घटता–बढ़ता jgrk FkkA tl& tgkxhj d le; e [kkfylk Hkfe dk {k=Qy cgr de gk x;k Fkk] जबकि शाहजहाँ ने इसमें वृद्धि की। खालिसा जमीन को tkxhj e vkj tkxhj dk [kkfylk Hkfe e ijofrr fd;k tk ldrk FkkA exy dky e jktk dh futh Hkfe dk [kkfylk dgk tkrk FkkA jktk [kkfylk Hkfe dk iê ij n ldrk FkkA tc rd iênkj fu;fer #i l Hkfe dj nr jgr Fk] Hkfe ij iênkjk dk LokfeRo cuk jgrk FkkA [kkfylk Hkfe dk iênkj गिरवी रख सकते थे, किसी अन्य को कृषि करने हेतु ठेके पर दे सकते थे और उस ठेके को cp Hkh ldr FkA v/;;u dh lfo/kk d fy, [kkfylk Hkfe dk nk Hkkxk e ckVk tk ldrk है– 'चरनौता' और 'कृषि भूमि'। गाँव के मवेfl;k d fy, pkjkxkg d #i e NkMh x;h Hkfe dk pkukrk dgk tkrk Fkk] ftle xko dh eofl;k pjrh FkhA pjukrk Hkfe ij lEi.k xko dk lkefgd vf/kdkj gkrk FkkA bl idkj dh Hkfe;k dj[k&j[kko dk vf/kdkj xke ipk;rk d ikl gkrk FkkA[27]

Tkkxhj Hkfe%

tkxhj Hkfe og Hkfe gkrh Fkh] ftl jktk viu lkeUrk dk mud }kjk jkT; dk nh x;h lokvk d cny nrk FkkA tkxhj Hkfe d cny lkeUr jkT; dk *j[k* rFkk *pkdjh* fn;k djr FkA j[k vkj pkdjh ,didkj l lkeUrk }kjk lfud [kpk gvk djrk FkkA tkxhj Hkfe ik;% वंशानुगत होती थी, किन्तु जगीरदार की मृत्यु के बाद jktk gdeukek ndj iu% ml Hkfe dk]lkeUr l y ldrk FkkA[28]

2- Hkke Hkfe%

bl idkj dh Hkfe d Lokfe;k dk *Hkfe;k* vFkok *Hkkfe;k*dgk tkrk FkkA lk/kkj.kr% *Hkke* Hkfe mUgh dk nh tkrh Fkh] tk jkT; dk db #ik e lok nr FkA Hkkfe;k dk vfuok;l drO; Fkk] xko] lMdk ,o कोष की सुरक्षा का ध्यान रखना। tc rd Hkkfe;k viu drO;k dk ikyu djr jgr Fk] mudk Hkfe ij vf/kdkj cuk jgrk Fkk] ijUr ; Hkfe dk cp ugh ldr FkA bul *Hkke cjkV* ;k *Hkke cko* d #i e vfrvYi dj fy;k tkrk FkkA bud fonkgh gku ij gh bul Hkfe dk Nhuk tk ldrk FkkA[29]

3- *Lkkl.k* vFkok *evkQh* Hkfe %

bl idkj dh Hkfe dk jktk viu vkfJr dfo;k] ckEg.kk] xklkb;k] HkkVk pkj.kk dk nrk था। इस प्रकार की भूमि पर इन सभी का वंशानुगत पूर्ण स्वामित्व होता था, किन्तु वे इसे बेच ugh ldr FkA

अध्ययन की सुविधा के लिए मुगल साम्राज्य की सम्पूर्ण कृषि भूमि को निम्नलिखित सूबों में foHkkftr fd;k tk ldrk g&cxky rFkk mMhlk lck] fcgkj lck] bykgkckn lck]vo/k सूबा, आगरा सूबा, मालवा सूबा, खानदेश सूबा, बरार lck] xtjkr lck] vtej lck] fnYyh lck] ykgkj lck] eYrku lck] dkcy lckA bue l 12 lck dk o.ku vcy Qty u viu xUFk vkbu&,&vdcjh e fd;k gA[30]

1. ;0 ,u0 M0] fn exy xoueUV] i0 99
2. **डी0 पन्त, दि कामर्शियल पॉलिसी ऑफ दि मुगल्स, पृ0 59**
3. **परमात्मा भारण, मुगलों का प्रान्तीय भासन पृ0 324**
4. ogh] i0 100
5. ogh] i0 100

6. ;0 ,u0 M0] fn exy xouesUV] i0 100
7. bjQku gchc] fn vxzfj;u flLVe vkQ exy bf.M;k] i0 111
8. ogh] i0 100; परमात्मा शरण, मुगलों का प्रान्तीय शासन, पृ0 322
9. **परमात्मा भारण, मुगलों का प्रान्तीय भासन, पृ0 323**
10. ogh] i0 323
11. ogh] i0 323
12. ;0 ,u0 M0] fn exy xouesUV] i0 100
13. vkbu] Hkkx 2 ¼ tjV ½] i0 94(;0 ,u0 M] fn exy xouesUV] i0 100
14. vkbu Hkkx 1] i0 287(bjQku gchc] fn vxzfj;u flLVe vkQ exy bf.M;k] i0 114
15. bjQku gchc] fn vxzfj;u flLVe vkQ exy bf.M;k] i0 114
16. ekjy.M] vdcj dh eR; d le; dk Hkkjr] i0 78
17. ogh] i0 78
18. ogh] i0 78
19. **नूरुल हसन, थॉट्स ऑन अग्रेरियन रिले□ान इन मुगल इण्डिया, पृ0 19**
20. bjQku gchc] fn tehnkl bu fn vkbu] iklhfMXLk vkQ fn bf.M;u fgLVh dkxl] bykgkckn] 1958, दृश्टव्य; **इरफान हबीब, मध्यकालीन भारत, अंक 1, राजकमल प्रका□ान, प्रा0लि0, दिल्ली, 2016, पृ0 46**
21. luhrk ijh] xke lenk; dh vo/kkj.kk] e/;dkyhu Hkkjr] Hkkx 2] lEiknd] **हरि□चन्द्र वर्मा, पृ0 420–421**
22. ogh] i0 421
23. ogh] i0 422
24. ogh] i0 423
25. bjQku gchc] VDukykth ,.M ofj;l V lkly pUt bu exy bf.M;k] i0 153(ekjy.M] vdcj dh eR; d le; dk Hkkjr] i0 90
26. vtyh pVth] jktiwr jktr=] vFk0;oLFkk rFkk lekt 0;oLFkk] e/;dkyhu Hkkjr Hkkx 2] lEiknd **हरि□चन्द्र वर्मा, पृ0 589**
27. ogh] i0 589
28. ogh] i0 589
29. ogh] i0 589
30. ogh] i0 589